जिमी के लिए मछलियाँ

अमरीकी नज़रबन्दी शिविर में
एक परिवार के अनुभवों से प्रेरित कहानी

लेखन व चित्रण: केटी यामासाकी
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

टारो और उसके भाई जिमी के लिए दुनिया एक डरावनी और भरमाने वाली जगह बन गई है।

पहले तो उनके घर के दरवाज़े पर तीन आदमी आए और उनके पिता को ले गए। तब टारो, जिमी और उनकी माँ को जापानी मूल के अन्य परिवारों के साथ, बहुत दूर जाना पड़ा, जहाँ उन्हें बैरकों में रहना पड़ा। ये बैरकें तारों की एक ऐसी बाड़ से घिरी थीं जिसमें तालाबन्द दरवाज़े थे और हथियारों से लैस पहरेदार भी।

नन्हा जिमी नई जगह का खाना खा ही नहीं पाता है, जो उसने पहले कभी खाया ही नहीं था। वह बेदम और सुस्त होने लगता है। टारो अपने भाई को तकलीफ़ पाते देख नहीं सकता। वह मदद करने का फ़ैसला करता है।

अंकल जिम और आंटी आकी यामासाकी के लिए सस्नेह।

हमारे परिवार की कहानियों को ज़िन्दा बचाए रखने का आभार।

जिमी के लिए मछलियाँ

अमरीकी नज़रबन्दी शिविर में
एक परिवार के अनुभवों से प्रेरित कहानी

लेखन व चित्रण: केटी यामासाकी

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जब टारो और जिमी समुद्र को जाते, टारो जिमी को मछलियों के बारे में बताता। वह कहता कि मछलियों ने ही टारो को तैरना सिखाया था। जिमी उम्मीद करता कि किसी दिन वह भी टारो की ही तरह ताकतवर और चतुर बनेगा। वह भी मछलियों और पानी के सारे तौर-तरीके सीख सकेगा।

टारो प्रशान्त महासागर की ओर इशारा करता और अपने छोटे भाई को जापान की कहानियाँ सुनाता। उस देश की कहानियाँ जिसे माँ और पिता एक बेहतर ज़िन्दगी की तलाश में बहुत पहले छोड़ आए थे।
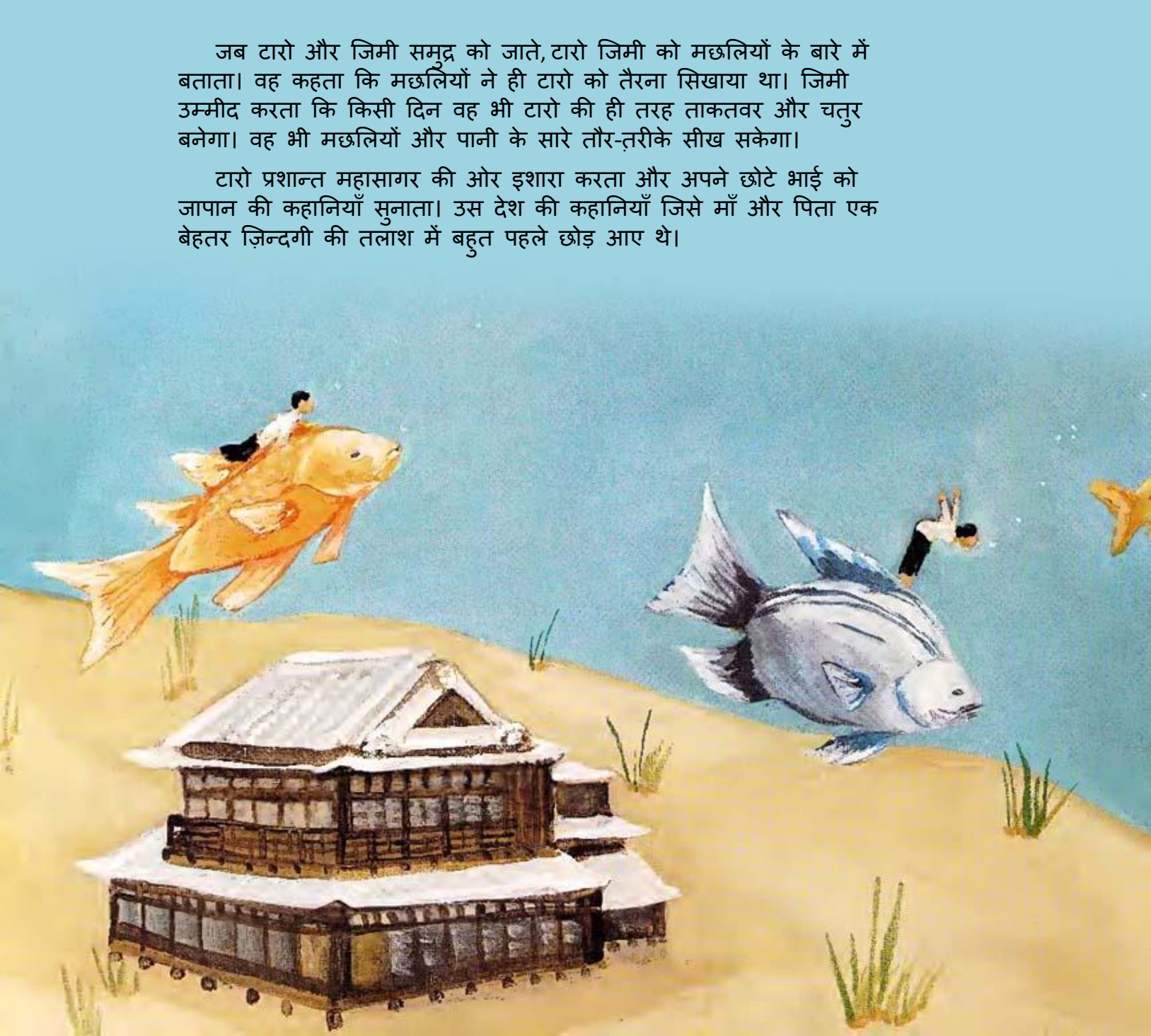
कैलिफोर्निया में उनकी ज़िन्दगी वाकई अच्छी थी। पिता ने दो दूसरे लोगों के साथ एक सब्ज़ी बाज़ार खोला था। आस-पास के किसान पिता के बाज़ार में सब्ज़ियाँ लाते। पिता तब इन सब्ज़ियों को छोटे ठेलों और दुकानों के मालिकों को बेचते।

कई बार माँ भी माल-मत्ते का हिसाब रखने आतीं। वे रसीले लाल टमाटर व पत्तेदार सलाद छाँटते ठेला मालिकों से दुआ-सलाम करतीं, मुलाकात करतीं।
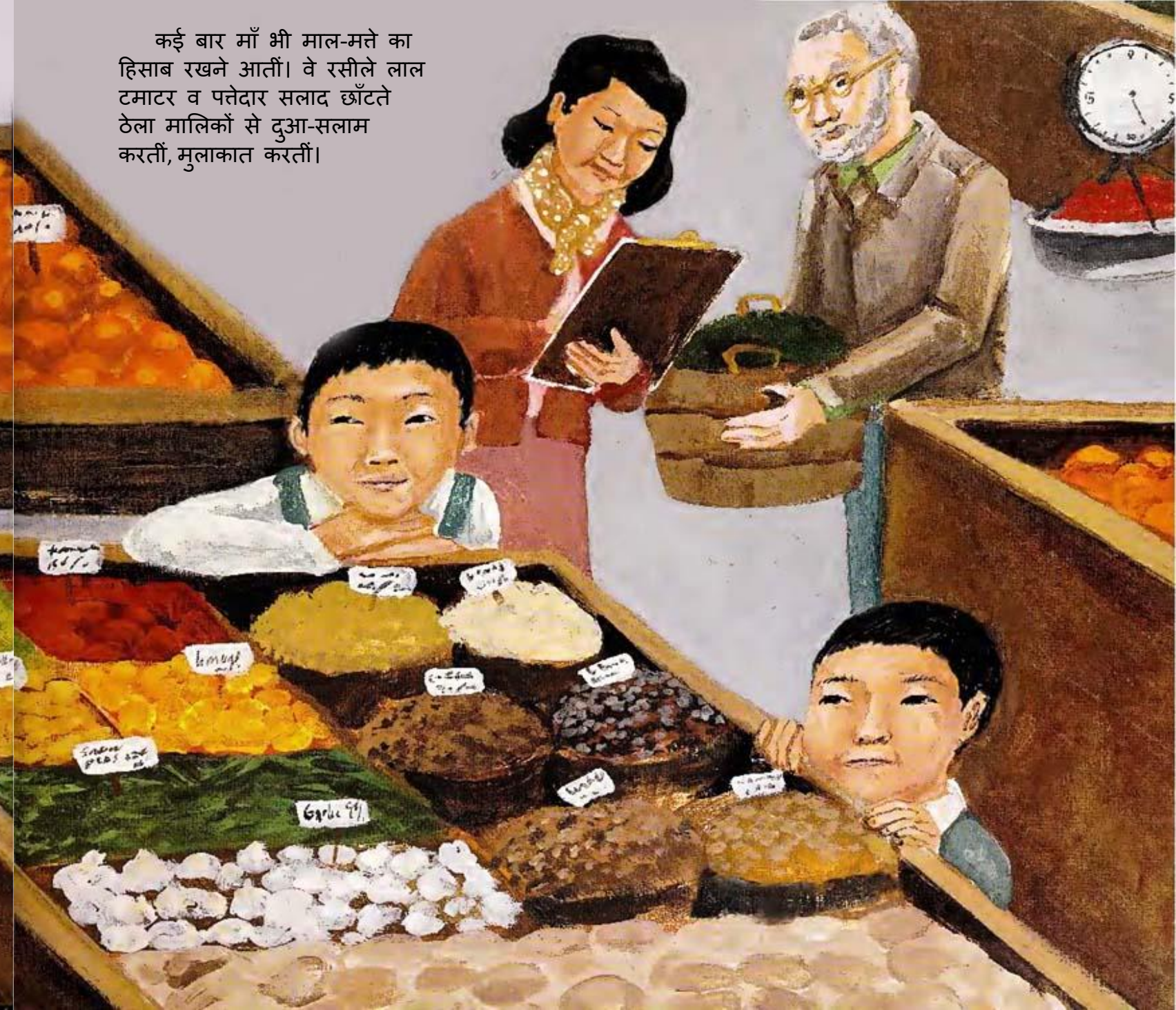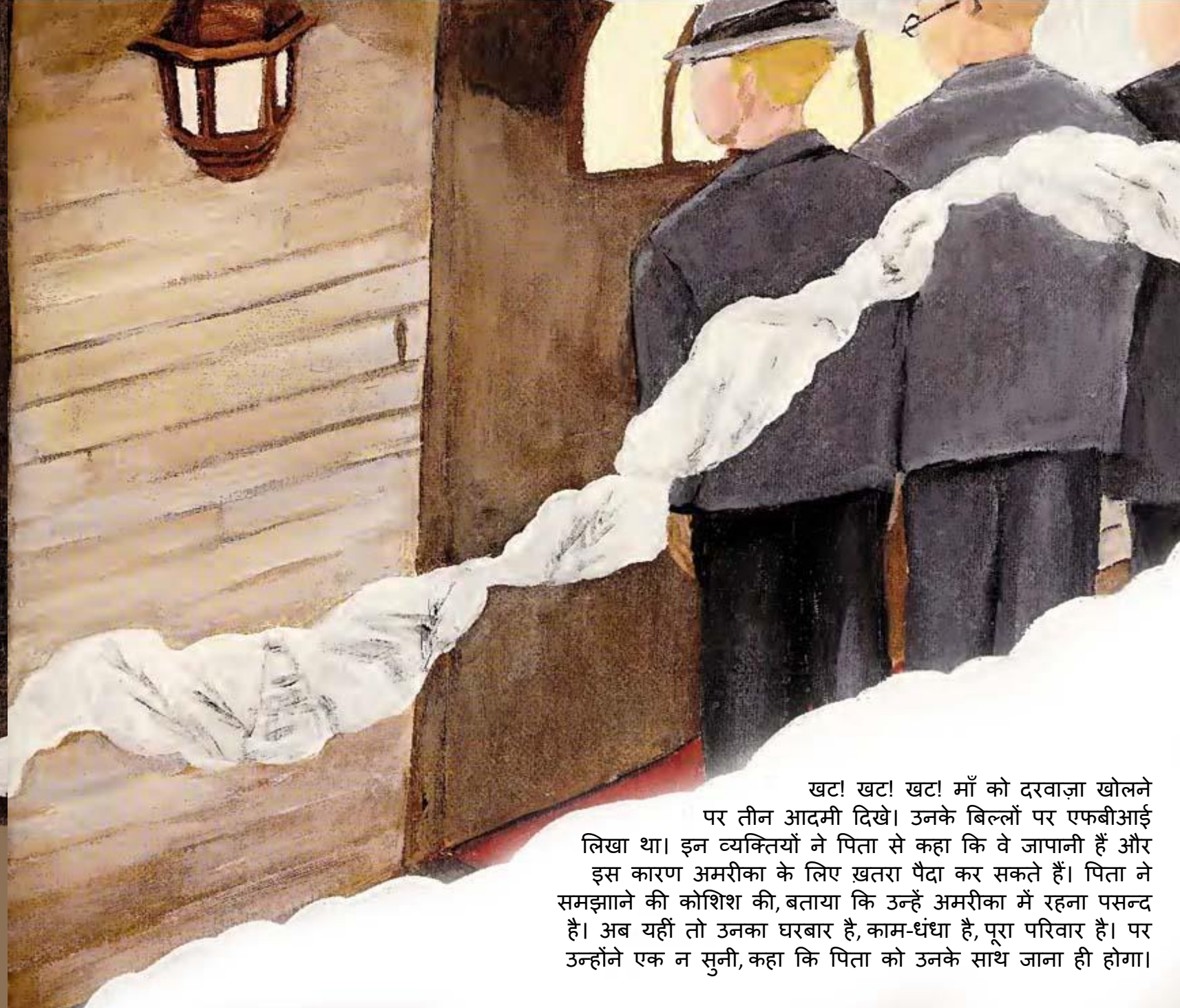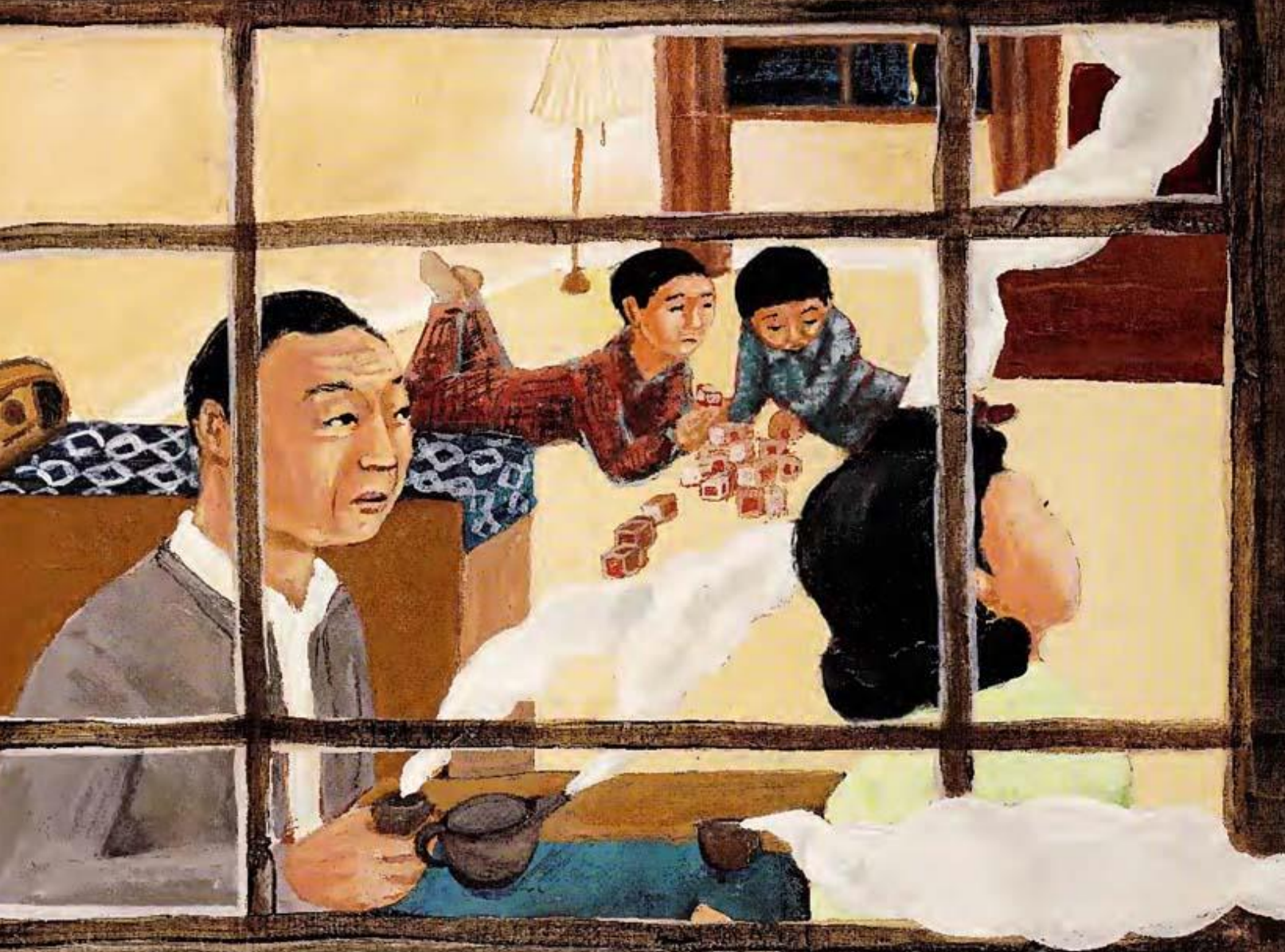
पर 1941 के दिसम्बर की शुरुआत में माँ और पिता ने रेडियो पर एक ख़बर सुनी। जापान ने हवाई स्थित पर्ल हार्बर पर बमबारी की है। दोनों गहरी चिन्ता में डूब गए।

टारो और जिमी सोचने लगे माँ और पिता इतनी फिक्र क्यों कर रहे हैं। आख़िर हवाई तो काफ़ी दूर है, और जापान तो उससे भी ज़्यादा दूर है।

खट! खट! खट! माँ को दरवाज़ा खोलने पर तीन आदमी दिखे। उनके बिल्लों पर एफबीआई लिखा था। इन व्यक्तियों ने पिता से कहा कि वे जापानी हैं और इस कारण अमरीका के लिए ख़तरा पैदा कर सकते हैं। पिता ने समझााने की कोशिश की, बताया कि उन्हें अमरीका में रहना पसन्द है। अब यहीं तो उनका घरबार है, काम-धंधा है, पूरा परिवार है। पर उन्होंने एक न सुनी, कहा कि पिता को उनके साथ जाना ही होगा।
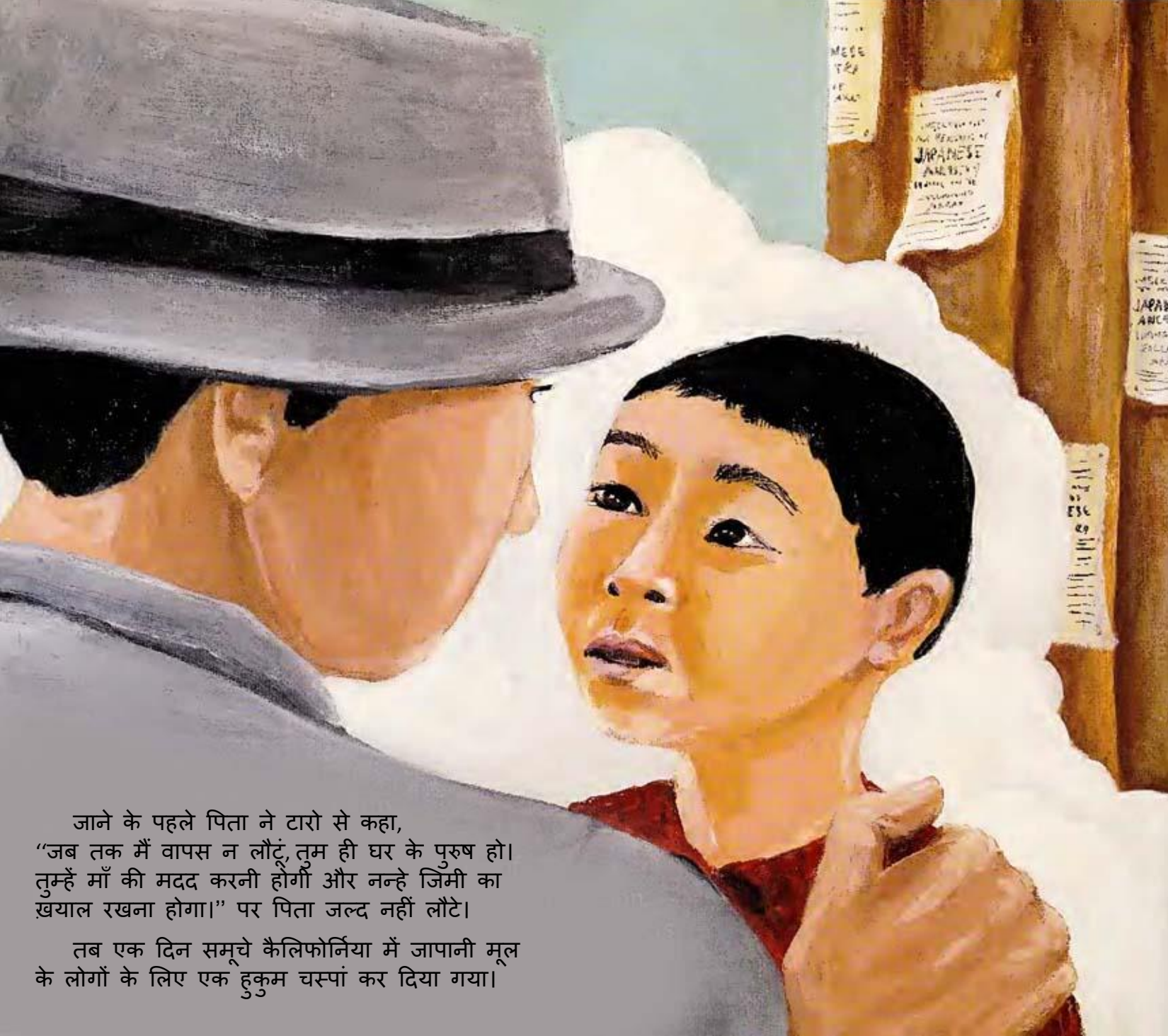
जाने के पहले पिता ने टारो से कहा, “जब तक मैं वापस न लौटूं, तुम ही घर के पुरुष हो। तुम्हें माँ की मदद करनी होगी और नन्हे जिमी का ख़याल रखना होगा।” पर पिता जल्द नहीं लौटे।

तब एक दिन समूचे कैलिफोर्निया में जापानी मूल के लोगों के लिए एक हुकुम चस्पां कर दिया गया।

जापान और अमरीका के बीच जंग छिड़ चुकी थी। जापानी मूल के लोगों को अपने घर, स्कूल, धंधे-नौकरियाँ छोड़ने पर मजबूर किया गया। जितना सामान वे हाथों में उठा सकते थे, बस उतना-सा ले वे ठसाठस भरी बसों में चढ़े, जिनके शीशे ढ़के हुए थे।
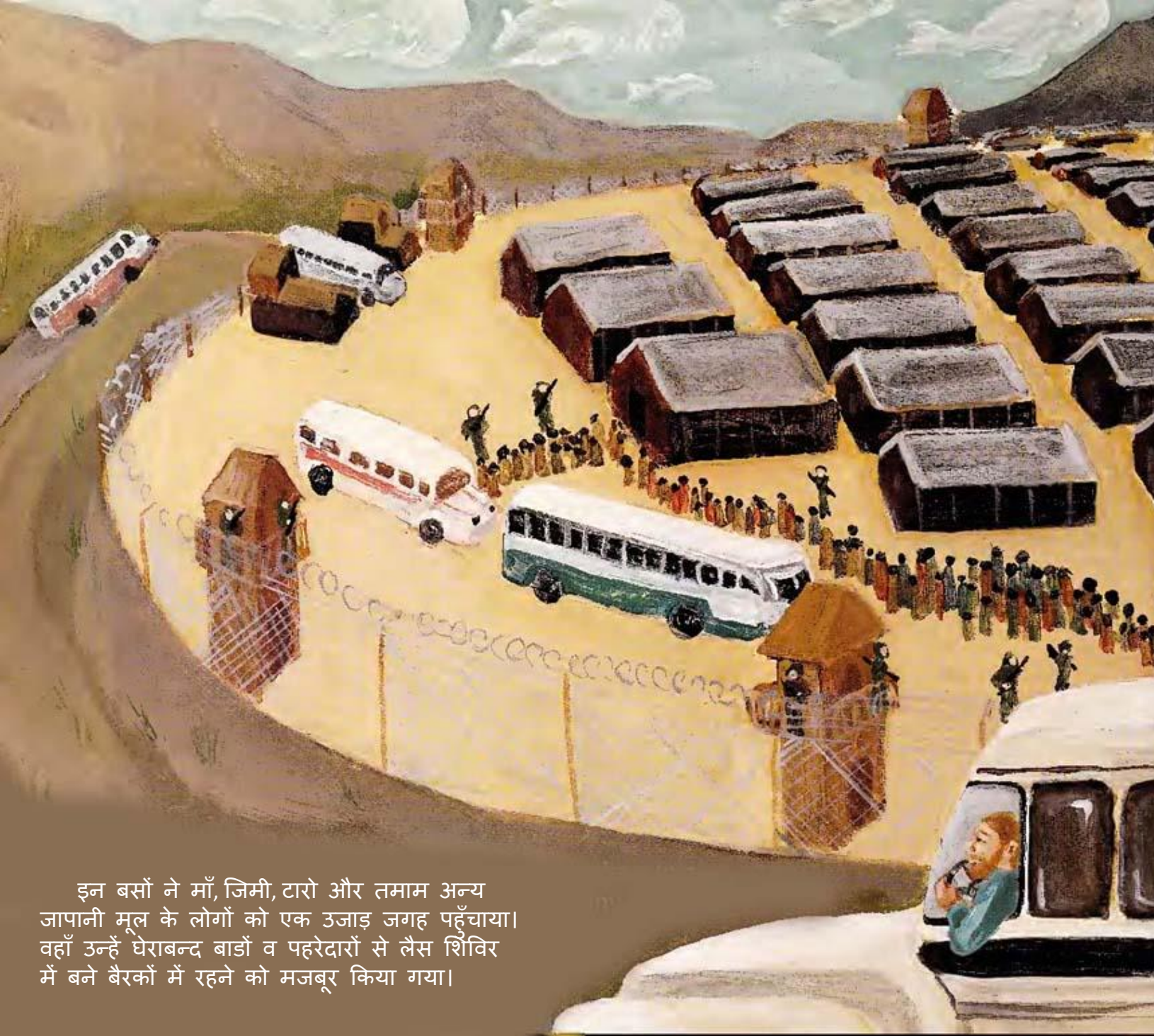
इन बसों ने माँ, जिमी, टारो और तमाम अन्य जापानी मूल के लोगों को एक उजाड़ जगह पहुँचाया। वहाँ उन्हें घेराबन्द बाडों व पहरेदारों से लैस शिविर में बने बैरकों में रहने को मजबूर किया गया।
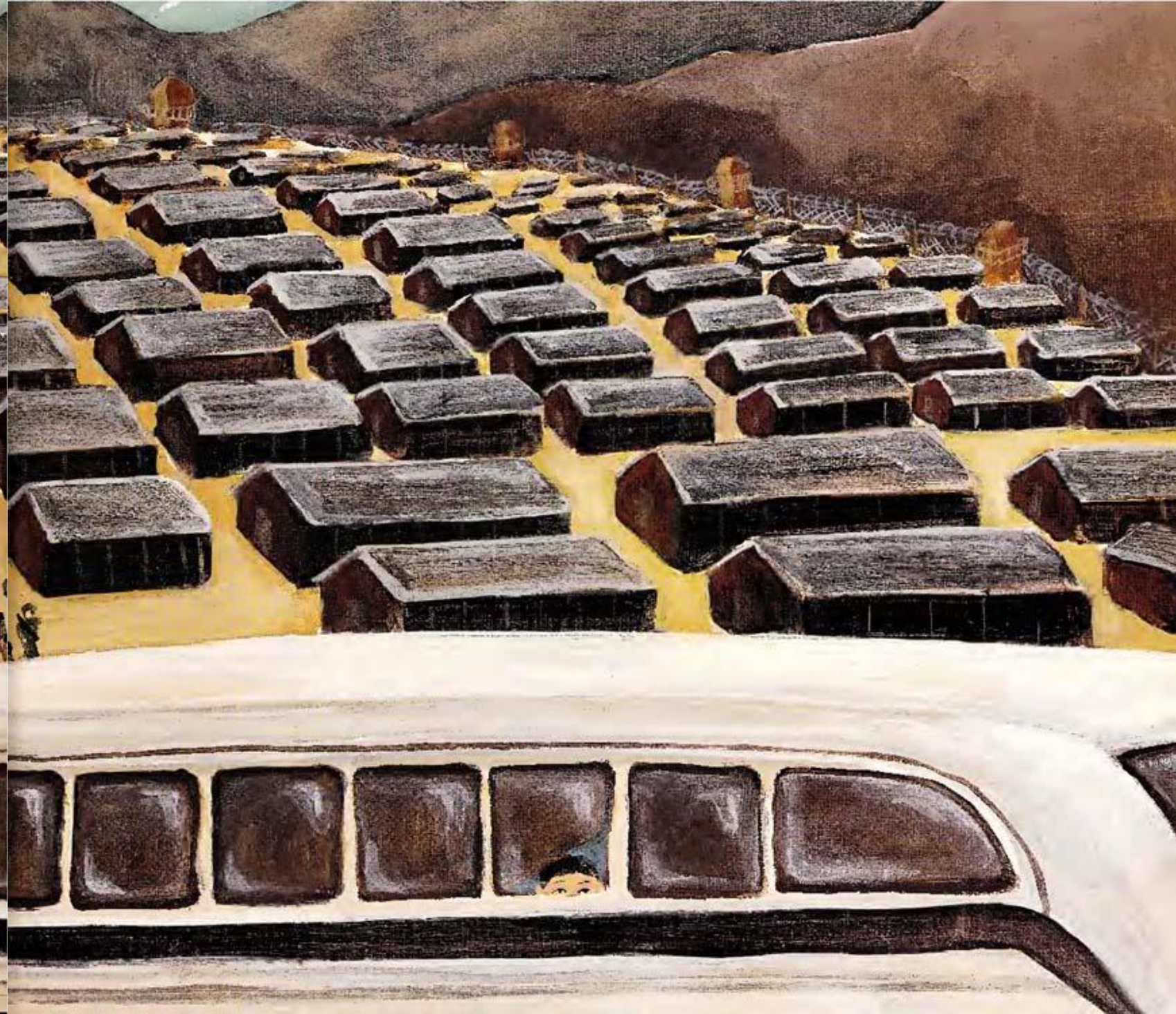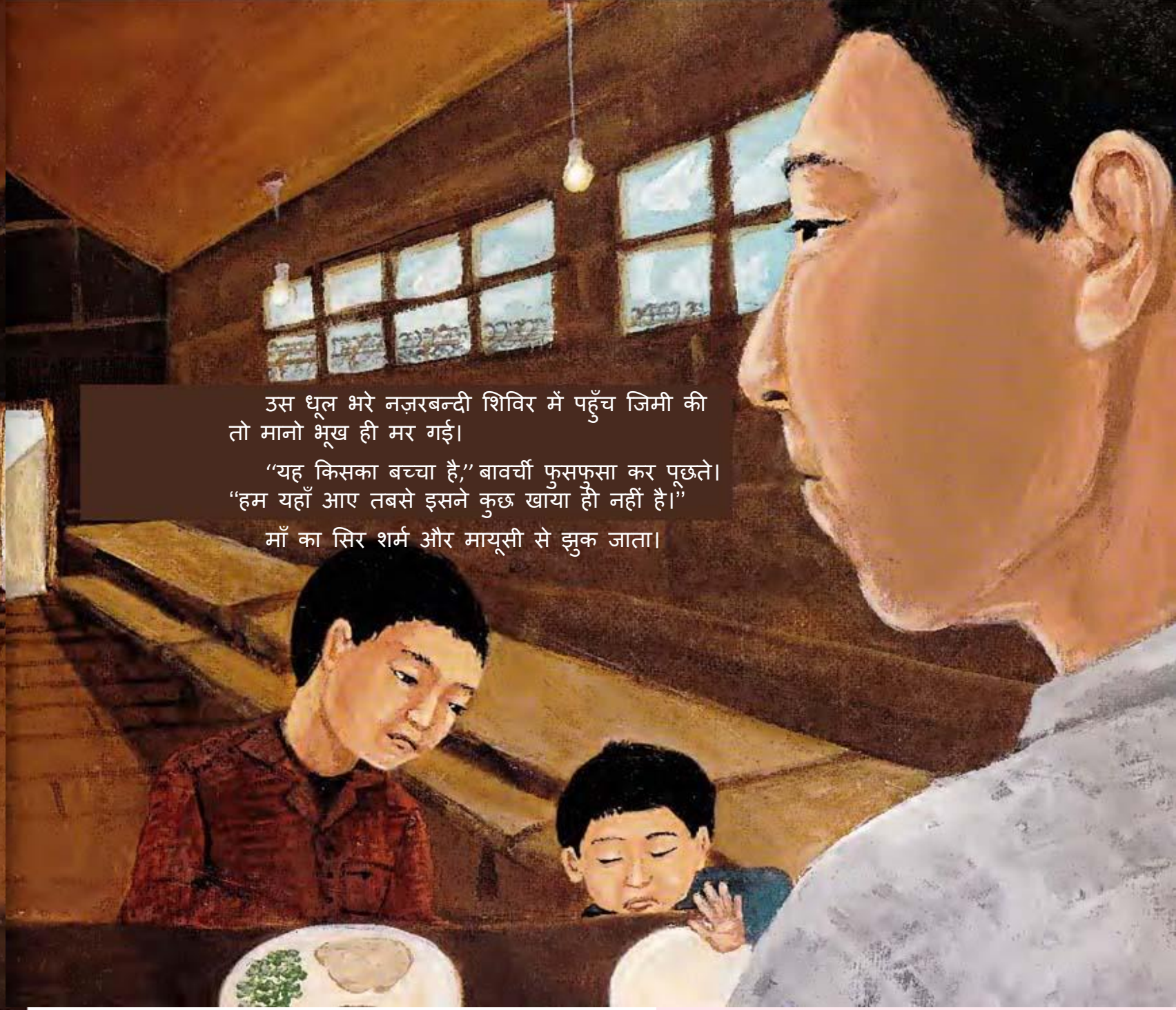
उस धूल भरे नज़रबन्दी शिविर में पहुँच जिमी की तो मानो भूख ही मर गई।

“यह किसका बच्चा है,” बावर्ची फुसफुसा कर पूछते। “हम यहाँ आए तबसे इसने कुछ खाया ही नहीं है।”

माँ का सिर शर्म और मायूसी से झुक जाता।
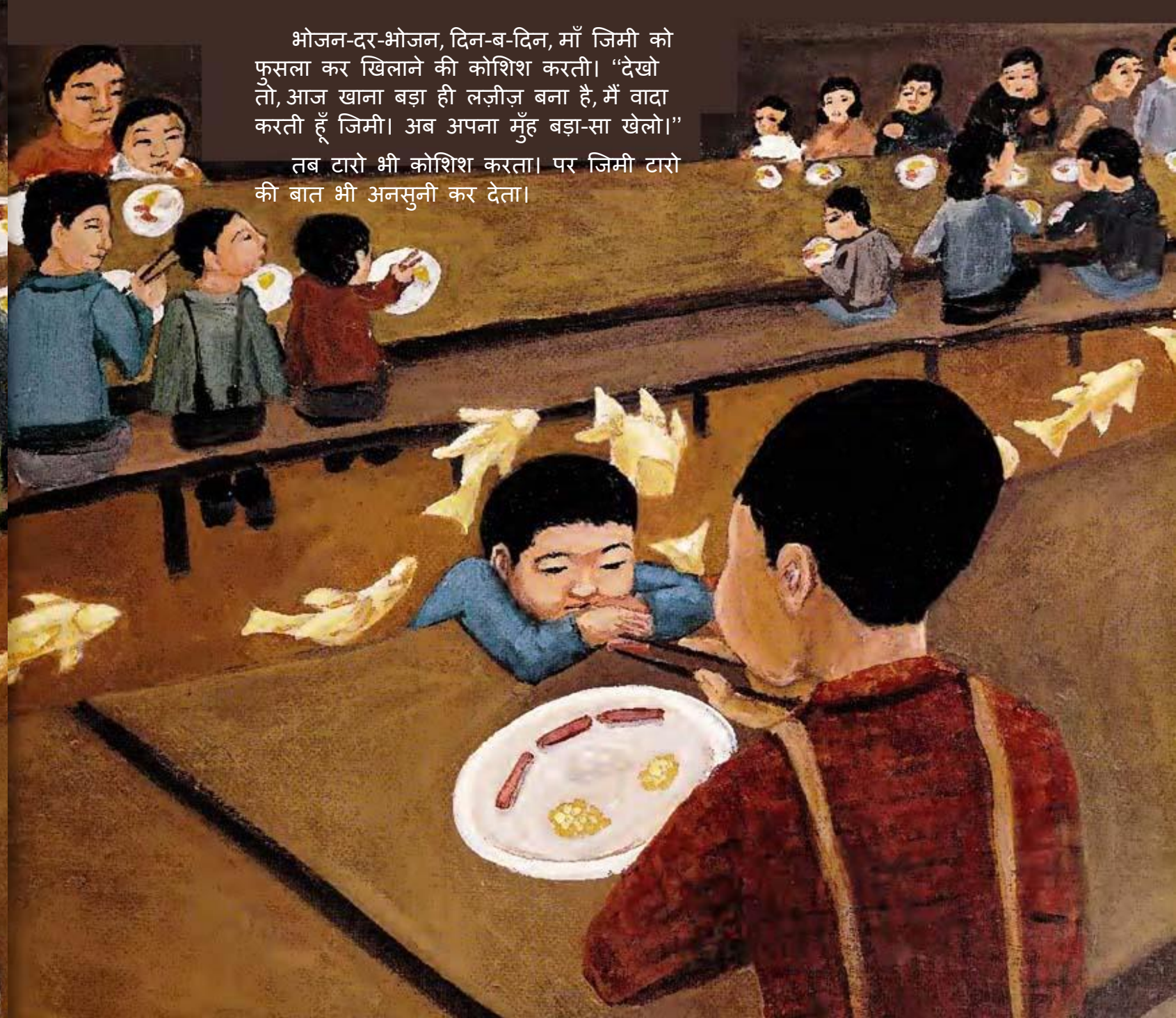
भोजन-दर-भोजन, दिन-ब-दिन, माँ जिमी को फुसला कर खिलाने की कोशिश करती। "देखो तो, आज खाना बड़ा ही लज़ीज़ बना है, मैं वादा करती हूँ जिमी। अब अपना मुँह बड़ा-सा खेलो।"

तब टारो भी कोशिश करता। पर जिमी टारो की बात भी अनसुनी कर देता।
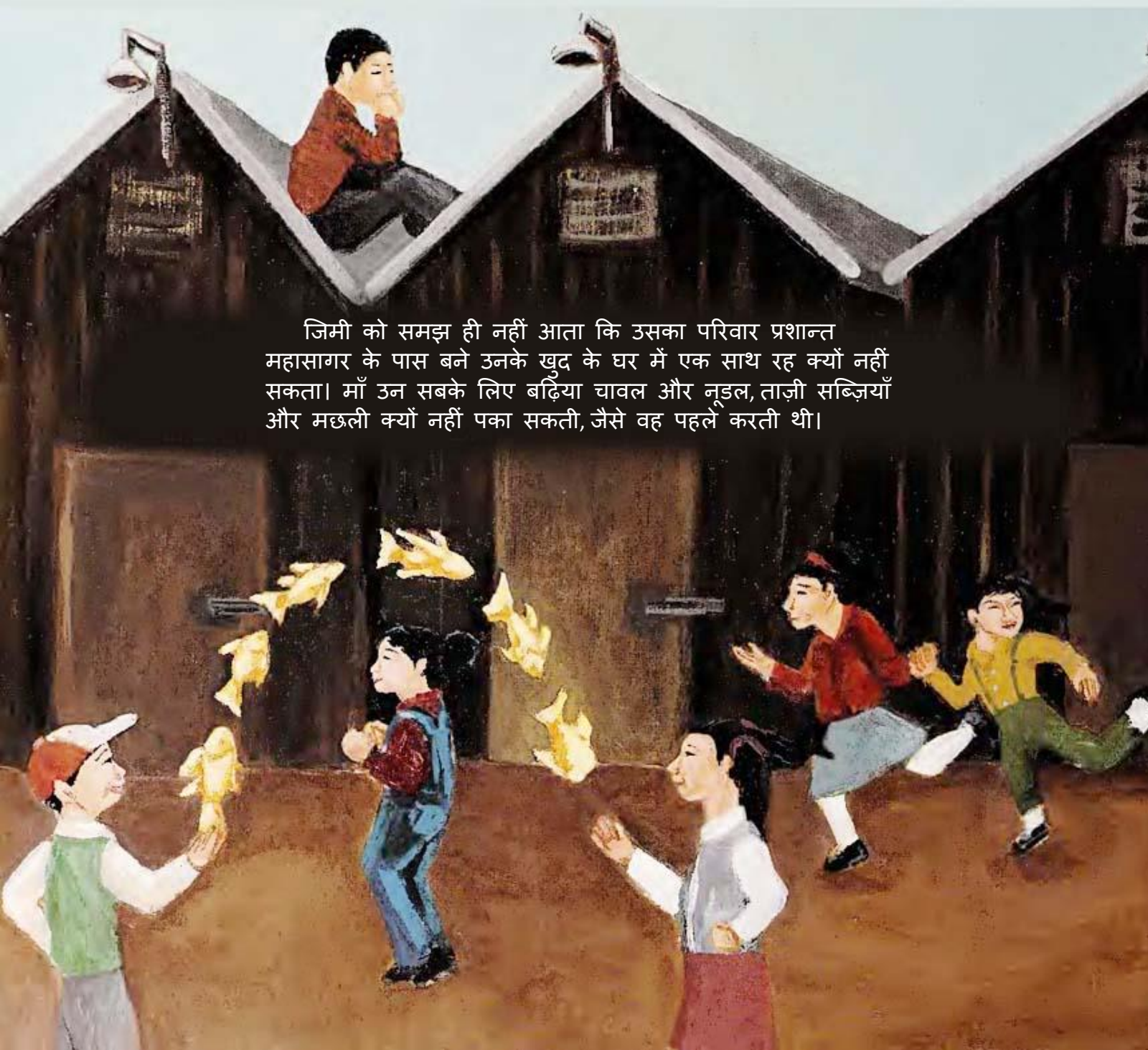
जिमी को समझ ही नहीं आता कि उसका परिवार प्रशान्त महासागर के पास बने उनके खुद के घर में एक साथ रह क्यों नहीं सकता। माँ उन सबके लिए बढ़िया चावल और नूडल, ताज़ी सब्ज़ियाँ और मछली क्यों नहीं पका सकती, जैसे वह पहले करती थी।
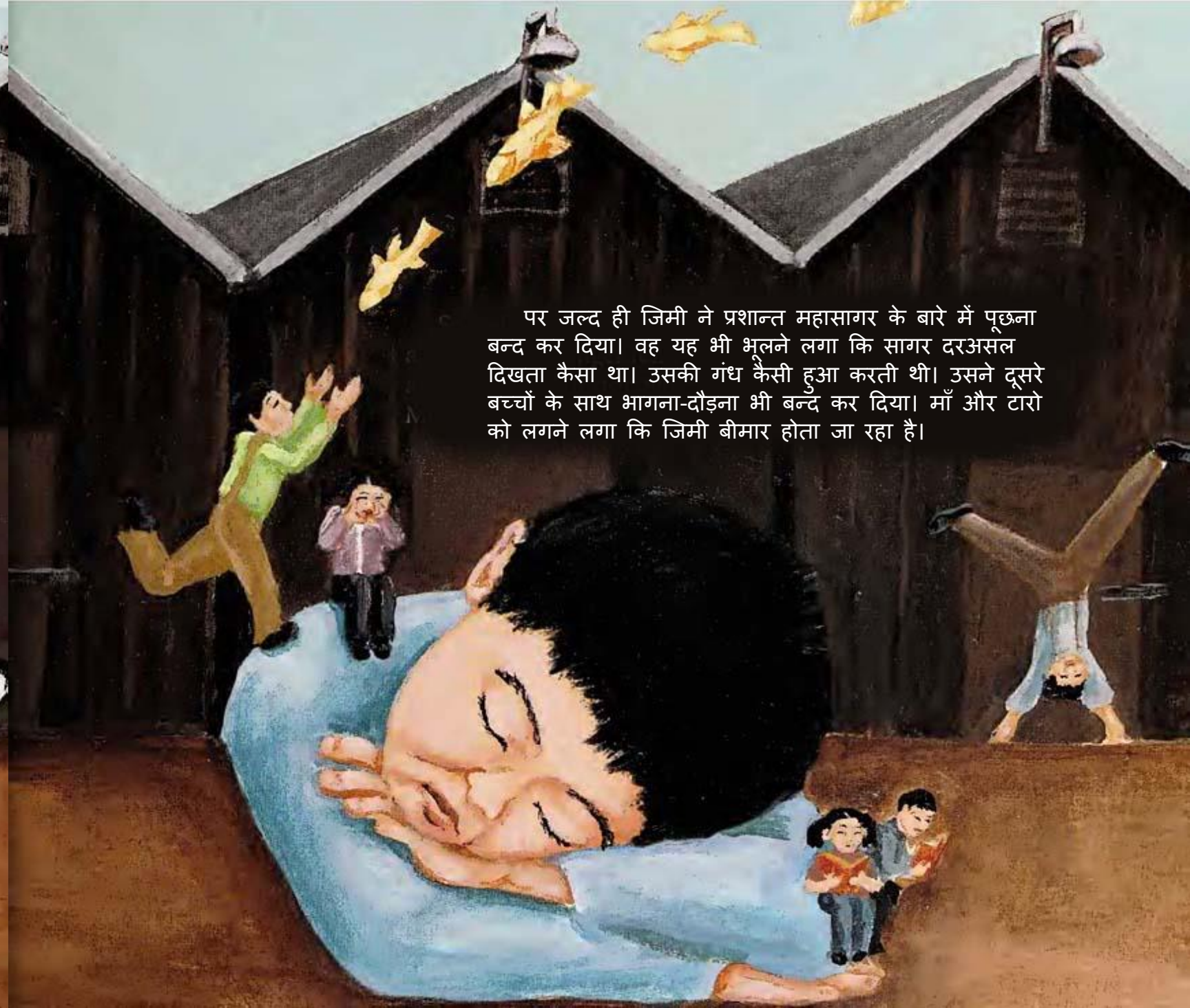
पर जल्द ही जिमी ने प्रशान्त महासागर के बारे में पूछना बन्द कर दिया। वह यह भी भूलने लगा कि सागर दरअसल दिखता कैसा था। उसकी गंध कैसी हुआ करती थी। उसने दूसरे बच्चों के साथ भागना-दौड़ना भी बन्द कर दिया। माँ और टारो को लगने लगा कि जिमी बीमार होता जा रहा है।

टारो को रात को नींद नहीं आती। उसके दिमाग़ में चिन्ताएं कुलबुलातीं। उसे जिमी की फिक्र होती। पिता की चिन्ता सताती। उसे दिसम्बर की वह रात याद आती जब वे लोग पिता को ले गए थे।

"मैं वापस लौटूं तब तक तुम्हें माँ की मदद करनी होगी और जिमी का ख़याल रखना होगा," यही तो उससे पिता कह गए थे।

हवा की सी चुप्पी से टारो ने शिविर के बाग से उठाई कतरनी को माँ के स्कार्फ में लपेटा और अपनी जेब में धरा। तब वह सामने के दरवाज़े से दबे पाँव बाहर निकल गया।
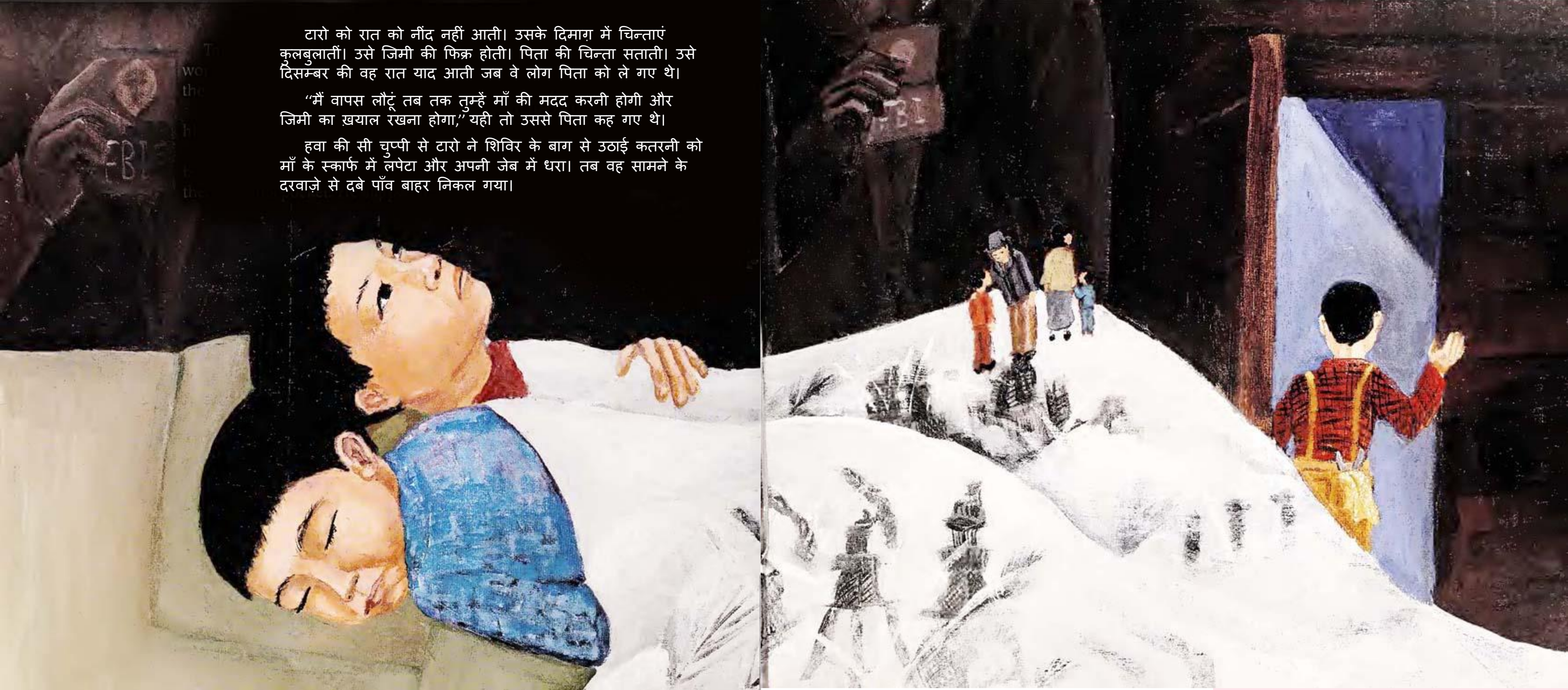
टारो रास्ते में एक से दूसरी छाया में लुकता-छिपता शिविर की बाड़ तक पहुँचा। उसे दूर सामने पहरेदार दिखे। हालांकि यह संभव न था, पर उसे लगा कि वे उसके दिल की धकधक सुन लेंगे।
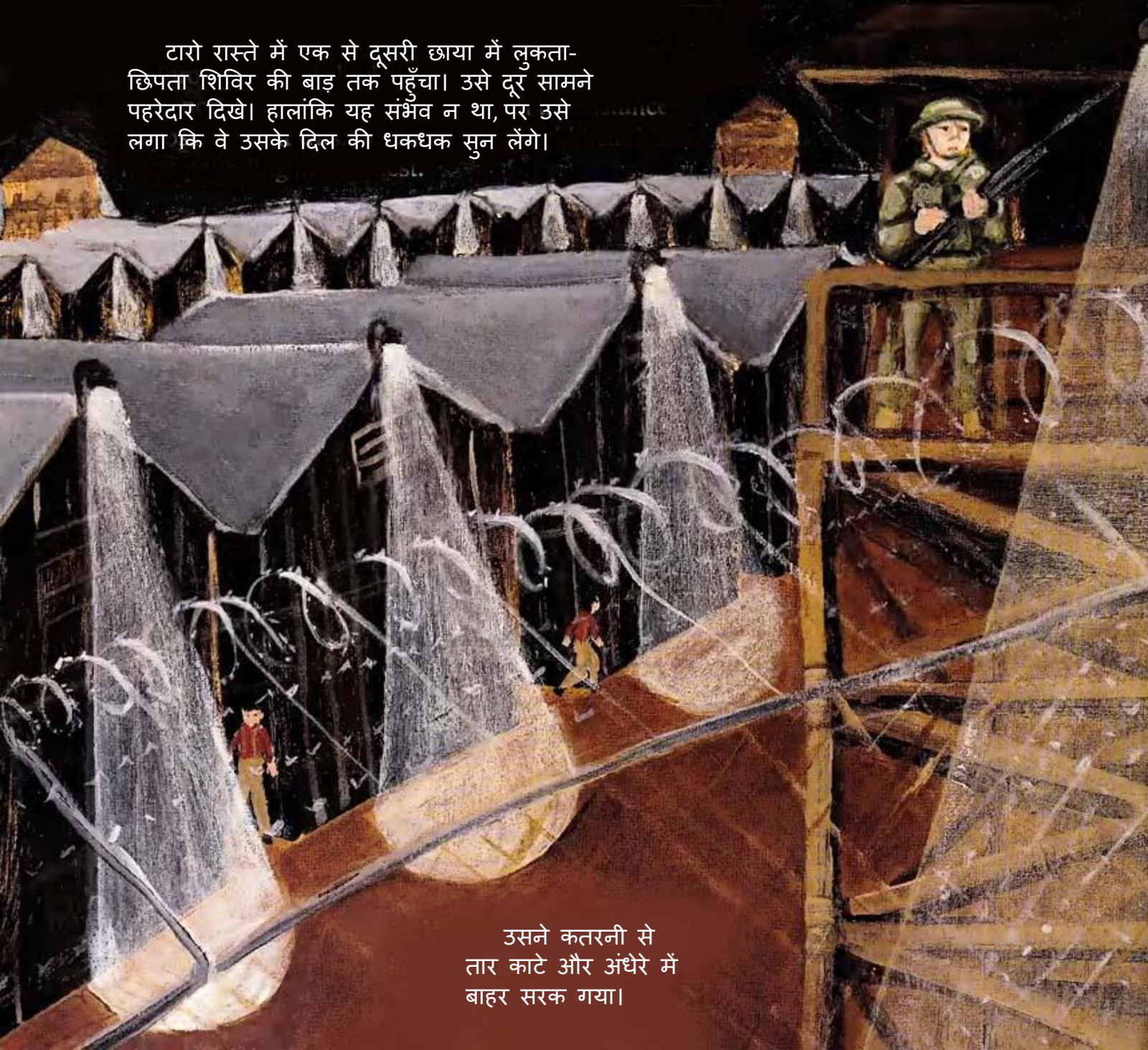
उसने कतरनी से तार काटे और अंधेरे में बाहर सरक गया।
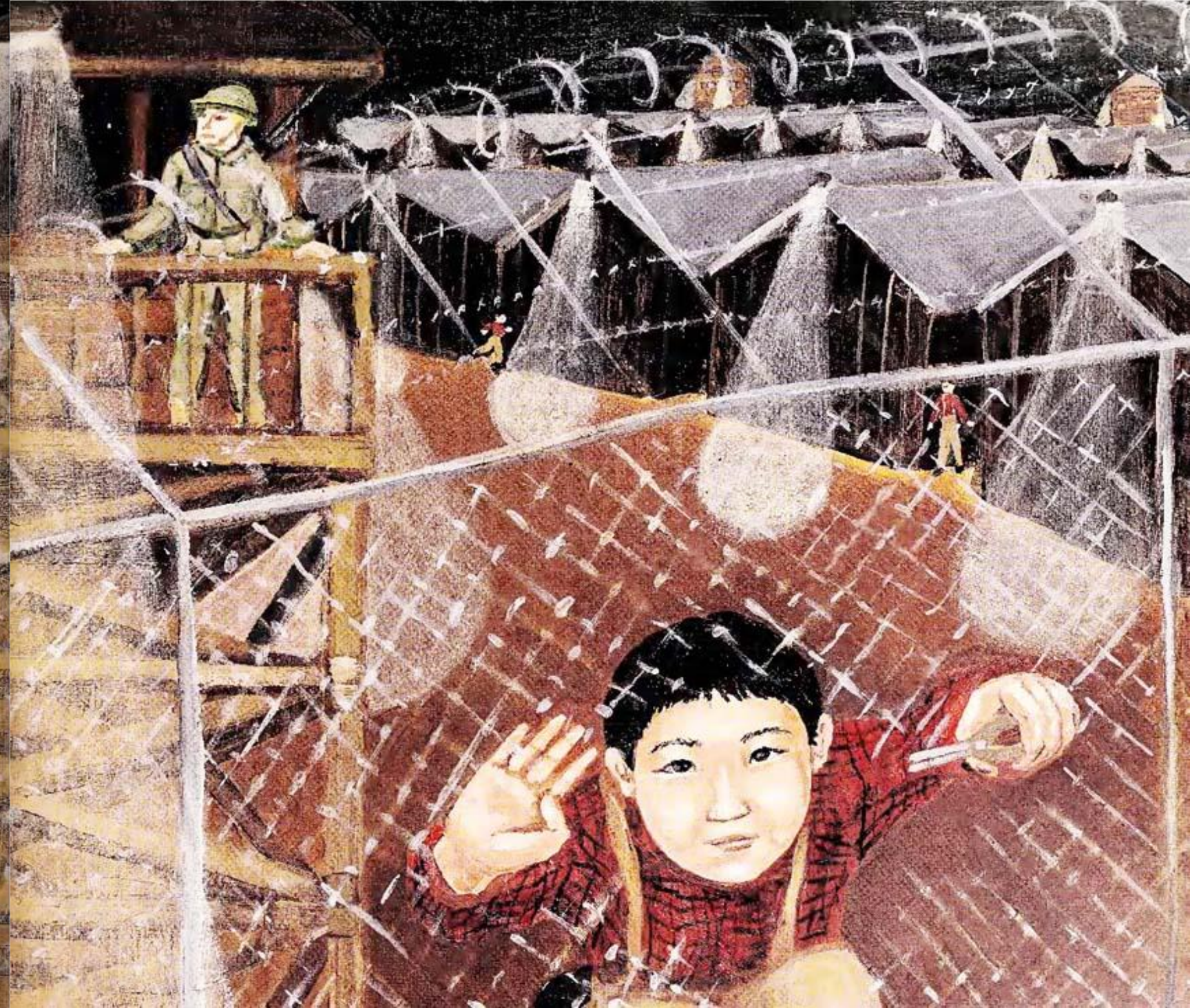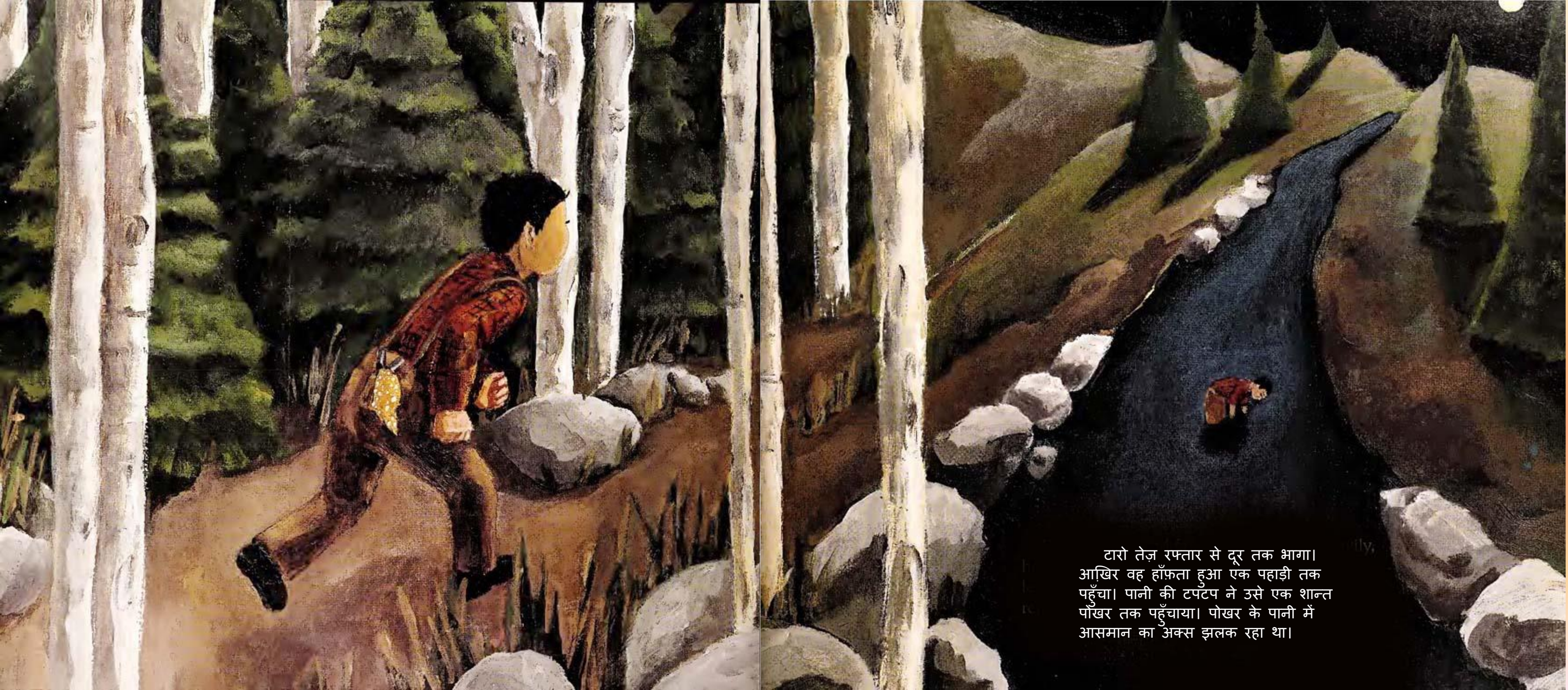
टारो तेज़ रफ्तार से दूर तक भागा। आख़िर वह हाँफ़ता हुआ एक पहाड़ी तक पहुँचा। पानी की टपटप ने उसे एक शान्त पोखर तक पहुँचाया। पोखर के पानी में आसमान का अक्स झलक रहा था।

पोखर में खड़े होते ही उसे अपने पैर से मछलियाँ टकराती महसूस हुईं। उसने झुक कर अपने हाथ पानी में डुबोए और उंगलियों को जल-घास की तरह हिलाने लगा। मन ही मन उसने मछलियों से अपने भाई के लिए मदद मांगी।

एक मछली तैरती हुई उसकी उंगलियों के पास पहुँची, टारो ने उसे फ़ौरन पकड़ लिया। तब एक और, उसके बाद एक और, जब तक टारो के पास सात मछलियाँ न हो गईं।
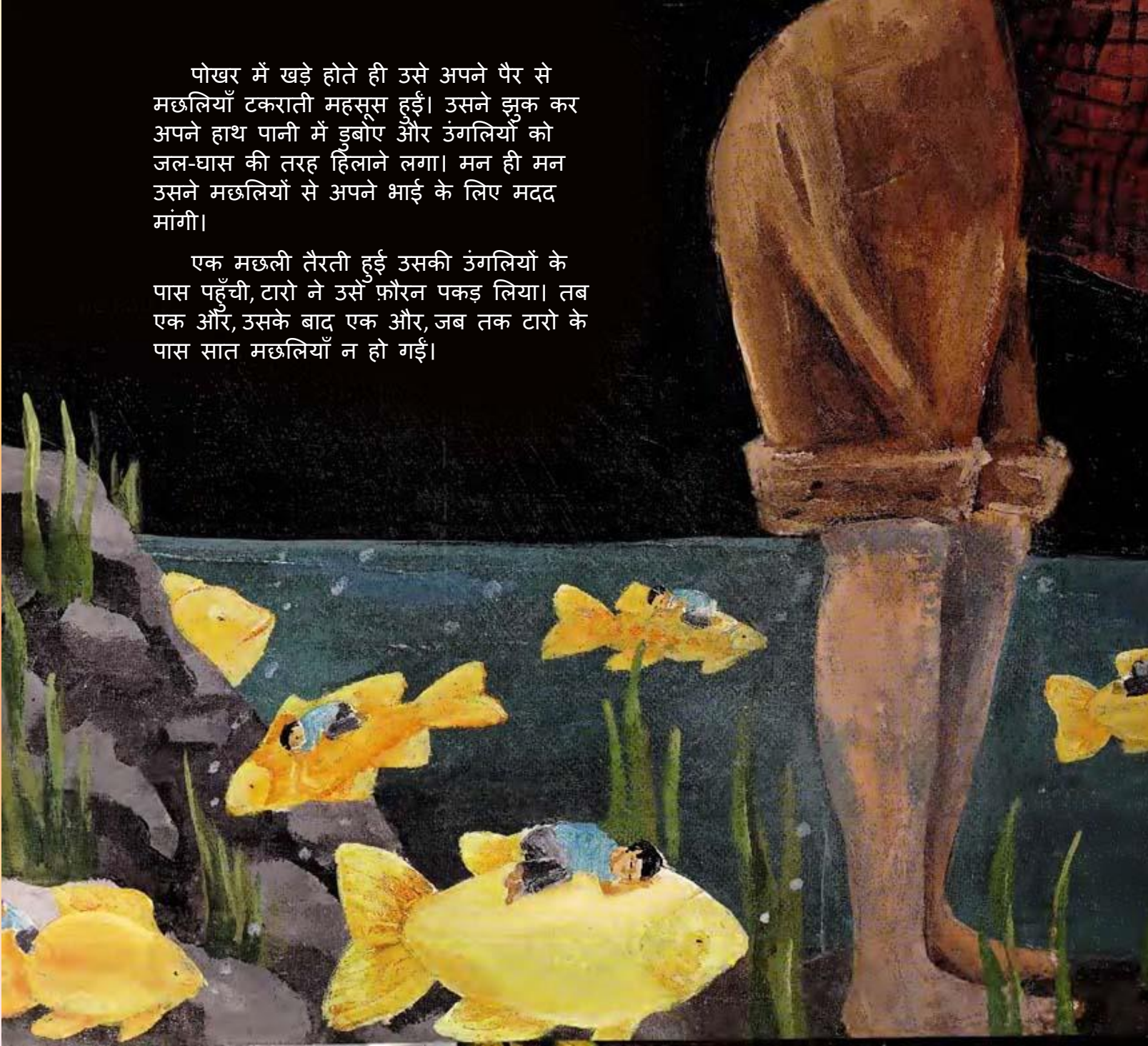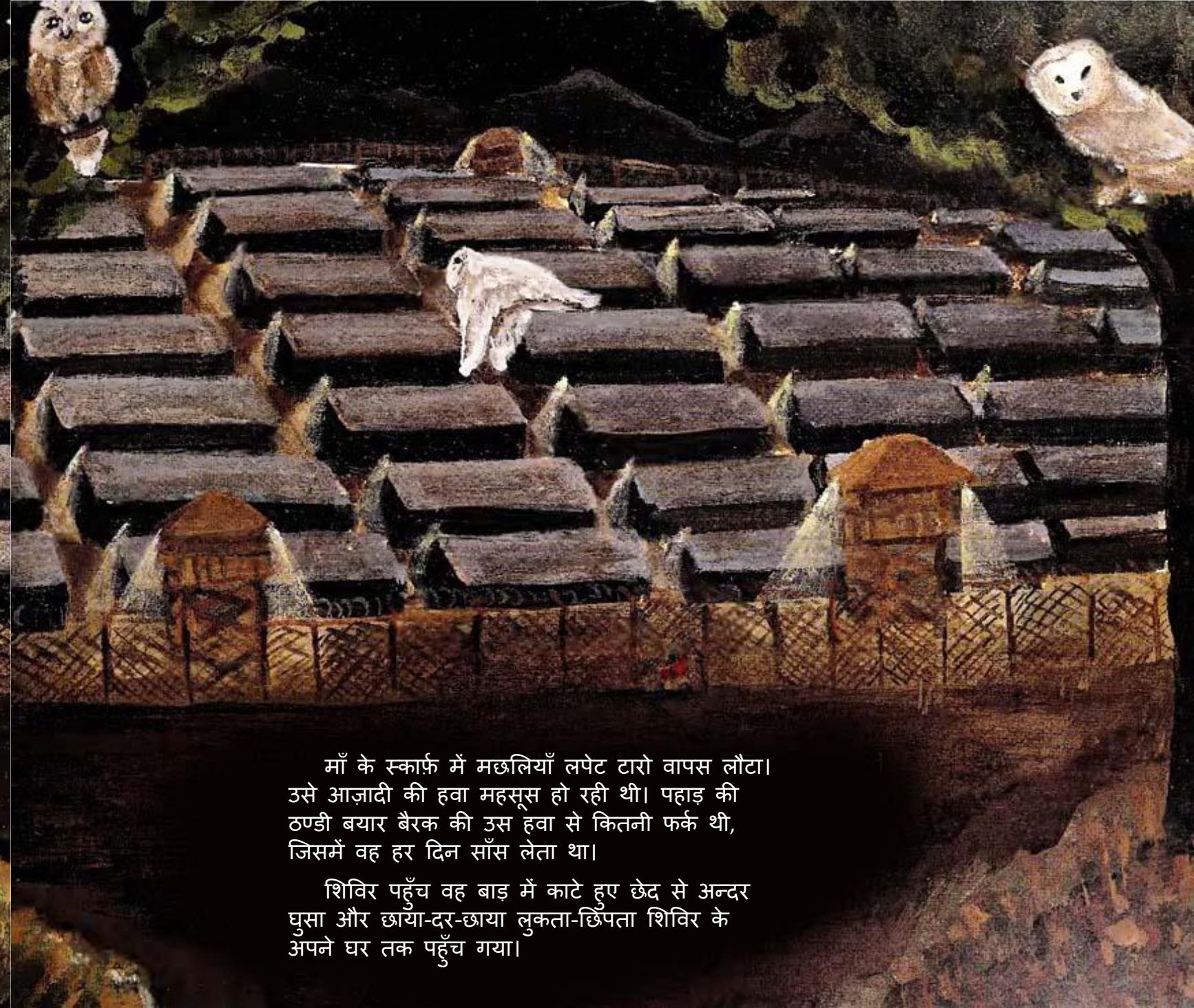
माँ के स्कार्फ़ में मछलियाँ लपेट टारो वापस लौटा। उसे आज़ादी की हवा महसूस हो रही थी। पहाड़ की ठण्डी बयार बैरक की उस हवा से कितनी फर्क थी, जिसमें वह हर दिन साँस लेता था।

शिविर पहुँच वह बाड़ में काटे हुए छेद से अन्दर घुसा और छाया-दर-छाया लुकता-छिपता शिविर के अपने घर तक पहुँच गया।
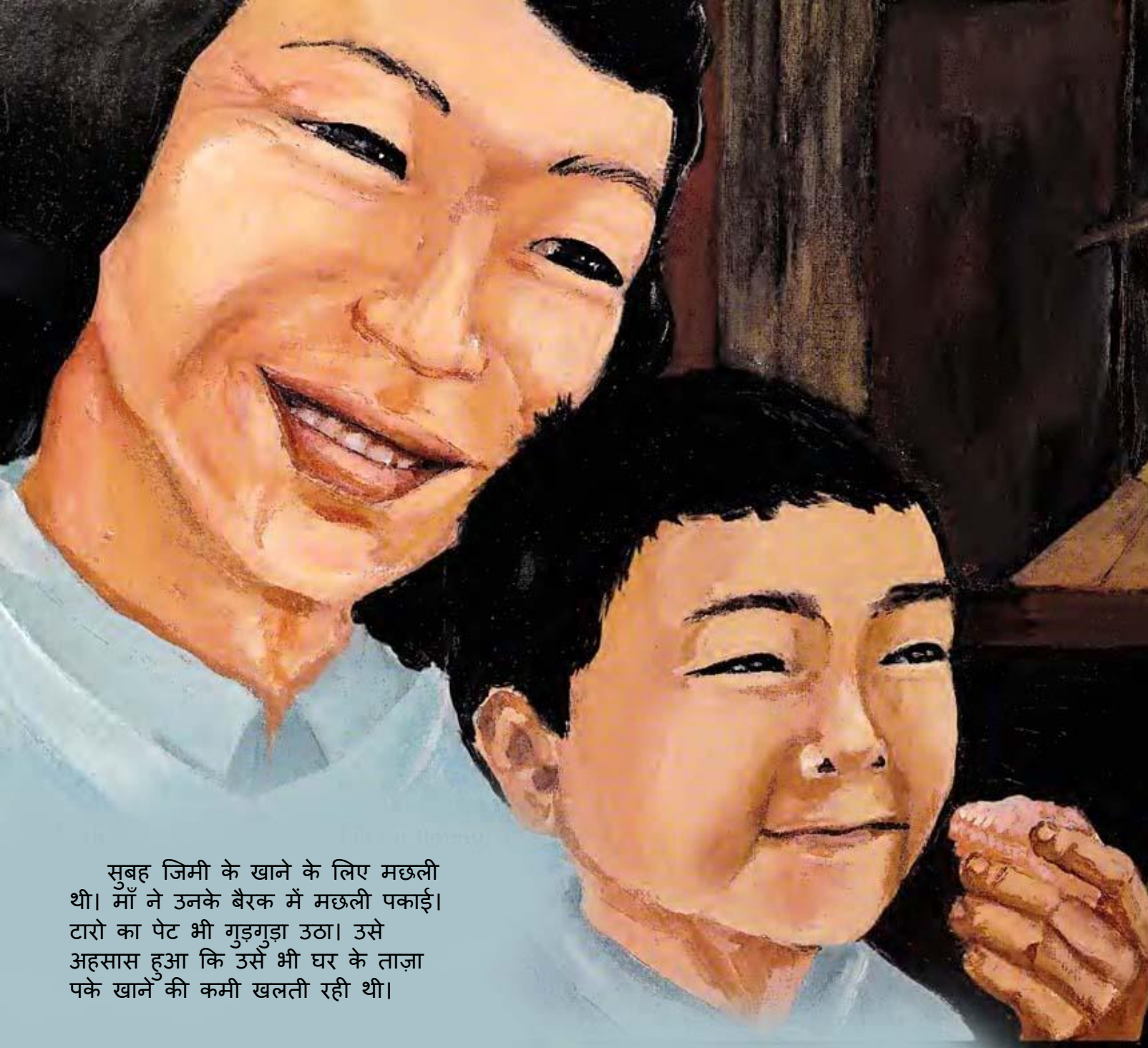
सुबह जिमी के खाने के लिए मछली थी। माँ ने उनके बैरक में मछली पकाई। टारो का पेट भी गुड़गुड़ा उठा। उसे अहसास हुआ कि उसे भी घर के ताज़ा पके खाने की कमी खलती रही थी।
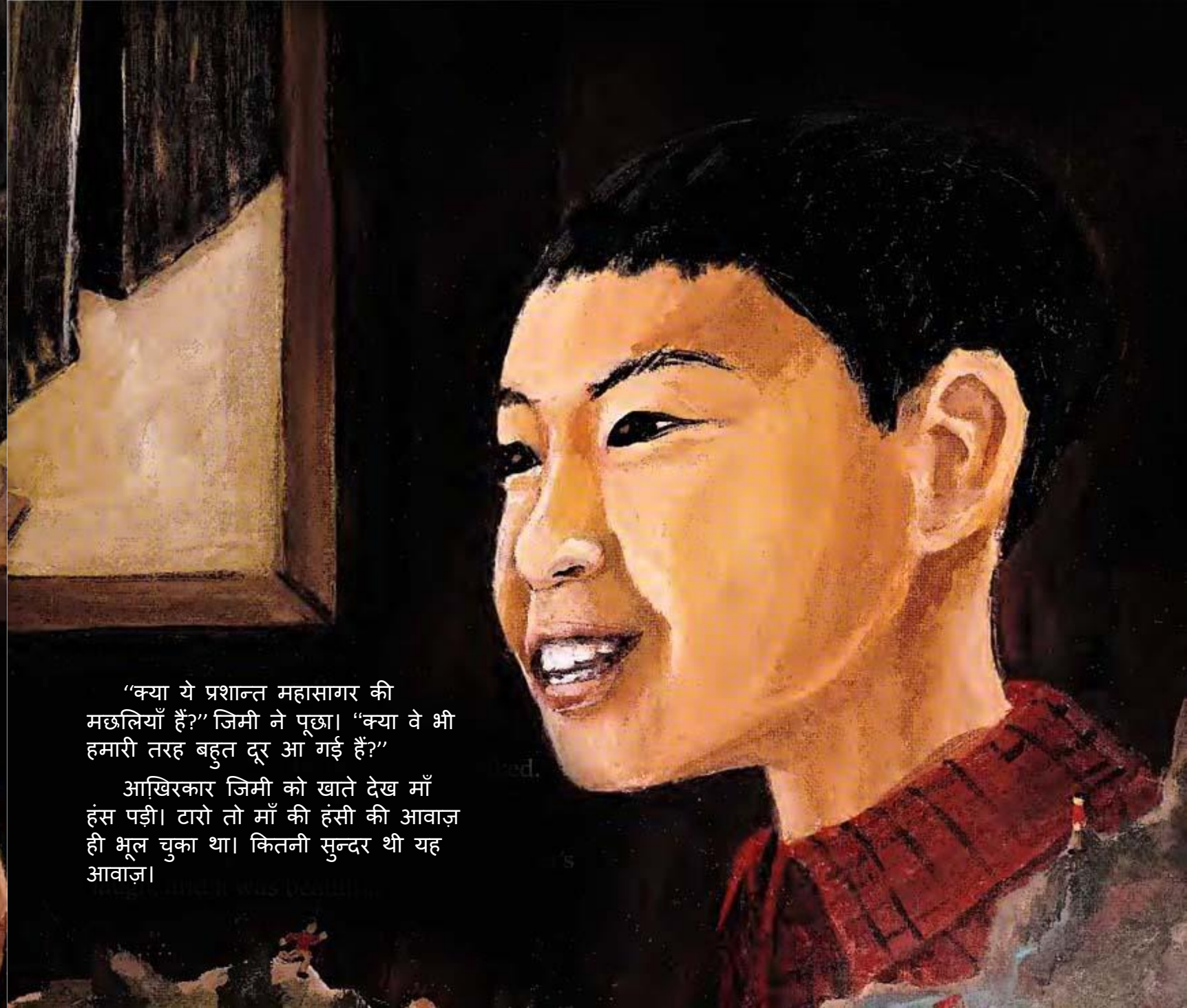
"क्या ये प्रशान्त महासागर की मछलियाँ हैं?" जिमी ने पूछा। "क्या वे भी हमारी तरह बहुत दूर आ गई हैं?"

आख़िरकार जिमी को खाते देख माँ हंस पड़ी। टारो तो माँ की हंसी की आवाज़ ही भूल चुका था। कितनी सुन्दर थी यह आवाज़।

भरे पेट के साथ टारो और जिमी बाहर मिट्टी में चित्र उकेरने गए। पर जब दूसरे बच्चे बाहर आए, जिमी उनके साथ खेलने भाग गया।

कई महीनों बाद पिता जेल से छूटे। उन्हें अपने परिवार के साथ नज़रबन्दी शिविर में रहने की इजाज़त दी गई। टारो ने पिता को दिखाया कि वह किस तरह हर सप्ताह बाड़े के पार पहाड़ों की आज़ाद हवा में जाता था ताकि जिमी के लिए मछलियाँ ला सके।

प्रिय पाठक, यह कहानी अमरीका में जापानी नज़रबन्दी शिविर में कैद मेरे अपने परिवार के इतिहास की है। मेरे दादा के चचेरे भाई शिविर से गुपचुप निकल अपने नन्हे बेटे के लिए मछलियाँ लाते थे। क़िताब में टारो और जिमी के साथ जो कुछ होता है, वह मेरे परदादा आनको हीराशीकी के साथ जो हुआ था, उस पर आधारित है।

7 दिसम्बर 1941 को जापानियों ने हवाई में पर्ल हार्बर पर बमबारी की। इस बमबारी में कई अमरीकी मारे गए। अगले ही दिन अमरीका ने जापान के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया। इसके बाद आने वाले कई साल अमरीका में जापानी मूल के लोगों के लिए बेहद कठिन सिद्ध हुए। 110,000 से भी अधिक जापानी मूल के अमरीकी नागरिकों और अमरीका में रह रहे जापानियों के घर-बार छिने, उन्हें अमरीका के उजाड़ स्थानों पर बनाए गए नज़रबन्दी शिविरों में रहने भेज दिया गया। इन लोगों में मेरे परदादा, परदादी और अन्य रिश्तेदार शामिल थे। उन्हें इसलिए नज़रबन्द किया गया था, क्योंकि सरकार का मानना था कि जापानियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। कई बेगुनाह जापानी पुरुषों को, जैसे मेरे परदादा को, पर्ल हार्बर पर हुए हमले की ही रात बन्दी बना जेल में ठूंस दिया गया। इसलिए क्योंकि सरकार को शक था कि वे जापान के जासूस हैं।

ये शिविर 1945 में बन्द किए गए। और 1988 में अमरीकी सरकार ने यह स्वीकारा कि यह एक भूल थी। सो सरकार ने नज़रबन्द किए गए लोगों से माफ़ी मांगी।

केटी यामासाकी की परदादी तोशी हीराशीकी, दादी-बुआ आकिको हीराशीकी और परदादा आनाके हीराशीकी, आमाचे, कोलेराडो में ग्रानाडा रीलोकेशन सेंटर में।

ग्रानाडा रीलोकेशन सेंटर, आमाचे, कोलेराडो।

केटी यामासाकी भिती चित्रकार, सामुदायिक कलाकार और शिक्षिका होने के साथ क़िताबों को चित्रों से सजीव भी करती हैं।

फिश फॉर जिमी (जिमी के लिए मछलियाँ) उनकी पहली पुस्तक है जिसे उन्होंने लिखने के बाद चित्रों से संवारा है। नज़रबन्दी शिविर के अनुभवों को दर्शाने के लिए कैटी ने वास्तविक व अमूर्त, दोनों ही तरह के बिम्बों का इस्तेमाल किया है। वे स्पष्ट करते हुए कहती हैं, "अक्सर हम जो करते हैं और जो सोचते हैं, वह एक नहीं होता। मैं पैमाने के साथ खिलवाड़ करती हूँ ताकि मुख्य किरदारों की अवचेतन और चेतन कल्पनाओं को दर्शा सकूँ।"?

केटी के भितिचित्र अमरीका, मैक्सिको, क्यूबा, और स्पेन के विभिन्न समुदायों में स्थित हैं। वे न्यू यॉर्क सिटी पब्लिक स्कूल फॉर डान्स, बैले टैक में कला सिखाती हैं। उन्होंने इसके पहले भी दो क़िताबों के चित्र आँके थे, जिनमें एक बच्चों की, तो दूसरी वयस्कों की थी। केटी ने 2003 में न्यू यॉर्क सिटी के स्कूल ऑफ विज़्युल आर्टस् से मास्टर ऑफ फ़ाइन आर्टस् की डिग्री हासिल की है।